

विष्णुमित्रादि

वसन्त राजाचार्य सुरत श्री महाविहार

DH 172

एतन्मन्त्रोक्तः

ॐ नमो ह गवतः ॥ सुखावस्थायेः ॥ धनकर्मसिधेः ॥ सुखसुखदत्तकः ॥
बलिदियः ॥ धनकावः ॥ कथं नयनः ॥ नकः वाक्याय ॥ अथ कायः ॥ यथा
न कथं गता पूर्ववाधिसत्त्ववर्थाधः ॥ वहीवीधिसत्त्व ह गवहिर्मातायी ह पूः
वर्गमेतत्तः ॥ सफयर्थः ॥ सफनिकृत्य पूषा गोश्रित्यावधामकास्ययस्यं
॥ ॐ दिव्यगन्तः पूषा गयीता अमृता नाम धाय पुन गन्तव्यं त्वं वत्सरी

दानाः १
षड्विंशत्यर्थः कृताः शर्मयन्तिष्ठतां ॥ ३ ॥ नमवाक्कनकमासं प्रशंसनं
मययन्तिष्ठतां ॥ लयनं नाय ॥ ३ ॥ अथ धनं वपिष्ठियं स्वधदं ॥ लं
खनहाय ॥ उवसवरीयिष्ठिया स्वधदं ॥ लारुगन अविष्ठानयाय ॥ काक्ल
लडाद्धयक ॥ वाक्क अथ ॥ उनमो ह गवतः सर्वदुर्गमियविस्वधनवाजाय गथा
गवाया अरुदं कसम्यक् स्वहायः गयथाः ॥ उं आधने २ सर्वयार्पित्वाधनेः ॥

३६
 या सर्वत्र गत्य पूजयन् ॥ सर्वपूजाय पूजयन् वृक्षानां गुणवर्धनां ॥ अरुवृक्ष
 अरुवृक्ष साधू वृक्ष कृष्णारुमः सर्वदुर्गतिं समाध्यासत्वा नां वा विषायाय नान
 कथं न किंचिद्वक्यं दीर्घायुखाननामिथा ॥ इव वृक्षकां गावुः सर्गतिं गतिपायनं ॥
 ॥ अन्धान् नानागमा सर्वधर्मा ॥ यवस्य गानपमिष्टः सर्वधर्मा ॥ अत्यन्ताना
 नाय विष्टु सर्वधर्मा ॥ उर्वरवधवं ॥ ॥ उर्वरविष्टु वरुवधयन् ॥ ३

॥ उर्वरविष्टु वरुवधयन् ॥ अत्यन्ताना नाय विष्टु सर्वधर्मा ॥ उर्वरवधवं ॥ ॥ उर्वरविष्टु वरुवधयन् ॥ ३
 यवस्य गानपमिष्टः सर्वधर्मा ॥ अत्यन्ताना नाय विष्टु सर्वधर्मा ॥ उर्वरवधवं ॥ ॥ उर्वरविष्टु वरुवधयन् ॥ ३
 ॥ उर्वरविष्टु वरुवधयन् ॥ अत्यन्ताना नाय विष्टु सर्वधर्मा ॥ उर्वरवधवं ॥ ॥ उर्वरविष्टु वरुवधयन् ॥ ३
 ॥ उर्वरविष्टु वरुवधयन् ॥ अत्यन्ताना नाय विष्टु सर्वधर्मा ॥ उर्वरवधवं ॥ ॥ उर्वरविष्टु वरुवधयन् ॥ ३

वास्याः यधुवादन ॥ मुनि ॥ मरु नर्यन ॥ कृम अगुनिहामलः धनकालि
कायाशः यिधुया सर्वज्ञानक ॥ वाक्कायादनलं खलायक ॥ युष्मकाः शिवि
भवधाम ॥ अशकायधन ॥ यथा न गथागना पूर्वो वाधिसखवर्थावः बहो
ः वृद्धहरावहिसानापिगृपूर्वगमत्यः सफयवर्धत्यः सफनीधत्य ॥ युष्म
काः शिविभवधामकाः यधुवादन ॥ इत्यः दिवंगनयुष्मकाः यिना अमकनामः

त्वयाययुनरानार्थत्यनुस्ययिधुसघृहीनासावकासवर्धसमांसाः समाकाः
सदवयः सर्वोपकवधसदिनाः सर्वकृमिगतीवकीनाः यद्विद्यनगदास्यामिसः
युष्मकायदीयगधनेवयादिसयूक्तदिवंगनयुष्मकनामत्वयायवर्धसावस
वीकायिधुसयययुमिसवध ॥ ॥ यनखयासवसं ॥ यवाक ॥ ॥ इति
अगुनिदयासमय ॥ खडीयाविनज्ञानकहामलकृमगयः अशवाक ॥ ॥ यवाः

मिमिकलज्ञानाश्रयववाधवाश्रमगलीविव्याथह्यगह्यागिकूलमः
म॥रुमीदगनरुयकायांयारागिसंकावहीनःविकलयिधुं सर्वथेवाडक
निवाधिनानांसववाववानाःसर्वथमनांरुपुगनांविकलयिधुमारीसत्माव
नायःविकलयानकाकयिधुसंययशासिस्वभा॥ ॥डोंगिलादकंश्रुचमनं
युनिगृह्णतां॥सिलासगयःगिलीदकलंस्व॥डंनमीरुगवगःसर्वइतिगिय

वित्मावनवाजायत्यादि॥लंस्व॥डंकांकांनिरलावनिरत्यादि॥इ॥श्रुमाः
घांपगिदुगदुवरसर्वावधुविधवनस्वभाहू॥वलि॥डंवाविमत्वःत्यादि॥
धलकास्ति॥डंनमीरुगवगश्रुगकडवाजायःत्यादि॥ध॥डंपूनरसरु
यन्तःश्रुयवमिगायूयूधःत्यादि॥लंस्व॥डंसर्वविगुवकुराश्वस्वभा॥वग॥
डंसर्वविगुवकुरागिलकुरुषनस्वभा॥सिध॥डंसर्वविगुरुडमधस्वभा॥वी

रुलाह ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रवाह्यस्य ॥ ॐ सर्वविग्नयज्ञायावमि
नायूजाभयसमृद्धरुवनसमयस्य ॥ ॐ सर्वविग्ननेवयस्य ॥ ॐ
वय ॥ ॐ सर्वविग्नजांवीवरुलायस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रस्य ॥ ॐ
व ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रवस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रवस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रवस्य ॥
यस्य ॥ वावक ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रदाविंदरुलायस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्र

यिसुकायस्य ॥ सवि ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्र
दीयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥
यूजाः वास्यावाहयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥
समृद्धरुवनसमयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥
समयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥ ॐ सर्वविग्नवज्रधूयस्य ॥

यद् ॥ ॐ सर्वविग्नपूजासंसारयविद्यामन्त्रविद्यावामिकापूजाभयसमूह
वनसमयद् ॥ ॐ सर्वविग्नस्वस्वविद्यानयानयावामिकापूजाभयसमूह
वनसमयद् ॥ ॐ सर्वविग्नकृष्णदन्तिनेत्रयह्वायावामिकापूजाभयसमूह
वनसमयद् ॥ ॐ सर्वविग्नयाज्ञिवियावामिकापूजाभयसमूह
वनसमयद् ॥ ॐ सर्वविग्नधर्मद्वययश्चानयावामिकापूजाभयसमूह
वनसमयद् ॥

ॐ सर्वविग्नआलाकयावामिकापूजाभयसमूह
वनसमयद् ॥ ॐ सर्वविग्नत्रयायवज्जगत्त्रादीयः
वामिकापूजाभयसमूह ॥ ॥ न
कासधुलथिलक ॥ स्नानजनक ॥ ॥ ॐ मनश्चमलमनस्वाला ॥ ॐ नमो
वक्तुर्वद्वर्गनियविद्यावनवाजाय कथारागाय ॥ ॐ नमो
वक्तुर्वद्वर्गनियविद्यावनवाजाय कथारागाय ॥ ॐ नमो
वक्तुर्वद्वर्गनियविद्यावनवाजाय कथारागाय ॥ ॐ नमो
वक्तुर्वद्वर्गनियविद्यावनवाजाय कथारागाय ॥ ॐ नमो

यथायसर्ववर्मावयवविष्मायनस्य वा ॥ इयथा न कथा गतानि त्वं अनुरुवाः
यासम्यक् वा लो ॥ गथा हं यविष्मायमि ॥ अरु मरु मरु मरु दव ना गत्स
काशय ॥ त्यादि ॥ मुनि ॥ कृगल मधव कलि लंख नाका गथा सल न जान क
शिराय कं नय ॥ यथा नो र्हि वा नाना ॥ अथ कायथन ॥ यथा न कथा गता
त्यादि ॥ पून ॥ यावत् सर्वसत्त्वा सत्त्वसगदी ना मृदु सौ वा रु वा यज्ञाः

प१

वासं स्वयं नजा वा डो पाद का वा वृ पित्वा वा संगि ना वा असंगि ना वा स
र्वं न सत्त्वा मया मरु मरु मरु मरु दय दे प्र निष्ठा ययि नया ॥ इयं न २ य प्र सा
ग त्यादि वी ग न पूषा नयी अ मूक ना मत्थ या य सा खा व त्यां ला क धा उ मन
ग रु रु स्व वा ह ॥ ॥ नि य तां डाल ॥ ॥ समय रु य यि सु स ॥ इ न भा रु
गा व न अ मृ न क उ वा जा य रु य था त्यादि ॥ त्या रु ला न ग्ना ल रु य ॥ किः

मनः उक्ति ॥ ३ ॥ अस्मात्सुखं महाधायात्यक्तावेकदंती नदी ॥ अस्मात्सुखं
 मयनं नैव दुःखं यथा मां मिहं ॥ निवृत्त्यातिथिं लानि वषट्कं वा सखा न वः ३ ॥
 धृतावकां गावर्गं नैव दुःखं यथा मां मिहं ॥ ॥ गुर्वरुवा उया लाहा किनप
 नाके रिलिविथ ॥ ॥ यावत्सर्वं सत्त्वा सत्त्व सगुनत्वादि ॥ ३ ॥ यश्च २ य
 यस्या गहदि वंग न श्रमक स गृणी ना श्रमक नाम ध्याय साखा व त्या

लोक वा उ मनु गच्छति स्वकाहं ॥ पखे शयन व पूजा लाणा घृवादन
 ॥ सुक्ति ॥ कथं न ॥ गता रुव ॥ मधु सया श्रु समय विवक ॥ कभा व
 विषयदा निष्ठु यि सु स्वका ॥ ॥ ०० ॥ निष्ठु क्रिया विवि स मा फः ॥ ००

कथां गद म उर
 कथा लय मे
 कला सां कलप
 ना नभा के
 कुम्भ नि का नि
 कुम्भी के
 कुम्भ नि का गो
 गो गो म न उजा
 उम क ना म ध
 वि उ उ धा ना
 उम सा हि व का
 को ना मे य म के
 या म मि व का म
 म क प वि क प
 पुता मा म भा व
 ना म मे र म उ ले
 वि म के ॥ ॥
 ना सा को द्रा य
 कि न ने ॥
 ना म र म न के
 जा व ना ॥
 आ गे के द्रा व
 ना के ना के द्रा
 का क म के ॥

कथां गद म उर

अस्मां

हापांगुलुमनुत॥ ववुविय॥ सताद्वर॥ कुसातपते॥ पिंड संकपूअस
नान॥ कुसपतिका॥ कुसतिंक्य॥ स्वतापुजापाके॥ साधिधाक्य॥ वज्रः
सनांयाक्य॥ साधिसाक्य॥ पाहःकाके॥ पुजायाय॥ द्वापां संतय॥ सिद्धतः
तिके॥ जजंकातय॥ प्यसांछाके॥ सांछाक्य॥ तं पिचास्येछाके॥ धउवा
सिवोछाके॥ चनिवःधुं॥ तयसतविय॥ सताद्वर॥ मयतथिकेनसा

सांछाके॥ कितनेसताद्वर॥ वरुके॥ अयेकयागौचिय॥ सताद्वर
र॥ आगोवोछाय॥ सकतांछाय॥ नोसिकेग्वागेवछाके॥ येद्वाछाके
सताद्वरके॥ होके॥ आश्रविद्यतय॥ मयतथोक्य॥ अडिःपाके॥ कोपः
रासायेद्वेवोक्य॥ अकाससातातके॥ धुपंउपके॥ मत्तंउपके॥ अयेकायजा
वंते॥ सताद्वर॥ आश्रविद्यतय॥ मयतथोक्य॥ इतिपिन्दुविधिसम्प

वचसा लोमायाः वचा हाता आदि माः पंचमाय्यं पुजा ॥ अतिः अतिः दिगुः देवा रक्षा
 दकिं लाया थाकरे ॥ द्वापां दिगु सद्ये ॥ अतिः थापी ॥ दिग्छाडि तांहाः
 द्वापां थाकुरे ॥ जाकि जये ॥ दिगं सांते धुंका छसिं निस्थे पुजायाय ॥ गाले
 भाजंगक्य ॥ वउ तय ॥ छसिं निस्थे पुजा ॥ दिग्छ पुजा थय न्यवय को द्यो पुजा क थं
 १ नमा श्री वरा सत्याय ॥ ॥ नक हलिचाय गुनु मंदल पंचगव्य सिद्ध तप
 पाप पुजाः पंचकुरु पुजाः पति पाल पुजाः महानि साधन आदि सत प्रम
 मुल धि ल विहर्जन सनाधि ॥ कल ससज नन नम कृण ता न नि पुजा द

व पुजा कर्त्तव्यं धुसंति ॥ थन सिद्ध तल स्यै दू काय ॥ थन मुनि पति गुलु
 म सुल दन क सत पुजा याय क ॥ जिष्वा दिवा सतः पंचगव्य लाय ॥ थन
 नल मंदल वाय कः पुजा याय ॥ गुनु या न दा हल प, वाष्वा वरु न तै लादि ॥
 थन सेष तः सा इ इ ताप आष तय दा ला ली गुनु ना ना मा पा लि त अ र्थ
 याय क ॥ वा क ॥ अं तन रसि लि र क न र प च स न र सो र किं हं हं हं का
 ल व्रज व स धन र धि नि र धन र न न र स न र व न र न र ति स न त ह ह स

प्रणिमंदिन सत्रिलाल २० प २२ ग य न सा सादि ग न न वृत्त व कु व ल वृत्त
५ लिषिद व ज न लो ४ थि लं च न क म ला य अर्थ प्रीति क स्वा ला प्रीति
प य न स का ना य स ग गु व न न प ला ना य गु व पा ५ अ र्थ प्रीति क स्वा
ला ॥ पा द पु ज्ञा ॥ द क्षि ना द र क गि द्या य द र्शन या य ॥ ना ता न रि य पा न
ल व न हा स्य स्नान वि य ॥ इ ज ना न स्या र्थि य प्रीति अ र्थो स्नान न वी रि ला
वि गी सि धि र व र हा नि धी कु नु ॥ ॥ ध न सि क य मि धा स हा ली ल

डा पु लि चु र्थ व व पु लि थ का र्थ ॥ हा ग ज प ल र्थ ग म ॥ ॥ ध न र क क
न वा धि व र्ज न बु धा का नो य था द रु म हा न ह म ना थि ता न ना र्थि य र्थ व
ज द द क्षि म ॥ ॥ र्थ ना थ ह गु नु कु ल पा ल पा द या प ला द या क न ला
जा न ला य म डि क या व र्थो इ गु ॥ थ धि इ गु प या रि व क इ धि ग थ
इ ज ना इ धा स हा बु ध प नि ल स ल र्थो वा धि र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ
इ ज ना गु व र्ज न अ धि क्कान या डा ग पा गु आ का र्थो था हा न द

DM 172

भारत अखिल भूत भूत भूत भूत

भारत अखिल भूत भूत भूत भूत
भारत अखिल भूत भूत भूत भूत
भारत अखिल भूत भूत भूत भूत

भारत अखिल भूत भूत भूत भूत
भारत अखिल भूत भूत भूत भूत
भारत अखिल भूत भूत भूत भूत



भारत अखिल भूत भूत भूत भूत
भारत अखिल भूत भूत भूत भूत
भारत अखिल भूत भूत भूत भूत

